

**सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन: शिक्षण गुणवत्ता और विद्यार्थी****अधिगम पर प्रभाव का अध्ययन****कुमारी सुनयना<sup>1</sup>**<https://doi.org/10.5281/zenodo.18019823>**Review: 31/11/2025****Acceptance: 02/12/2025****Publication: 19/12/2025**

**सार:** शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का मूल आधार होती है और इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जहाँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया केवल पाठ्यपुस्तक आधारित न होकर कौशल नवाचार, तकनीक तथा जीवनोपयोगी दक्षताओं पर केंद्रित हो गई है। ऐसे परिवर्तित शैक्षिक परिवृश्य में शिक्षकों का सतत व्यावसायिक विकास (Teacher Professional Development – TPD) अत्यंत आवश्यक हो गया है। भारत में सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न व्यावसायिक विकास कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, जिनमें NISHTHA, DIET आधारित प्रशिक्षण, SCERT/NCERT कार्यक्रम, ICT प्रशिक्षण, समावेशी शिक्षा एवं बाल-केंद्रित शिक्षण से संबंधित कार्यशालाएँ प्रमुख हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षकों की शैक्षणिक दक्षता, शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन क्षमता, मूल्यांकन रणनीतियों तथा डिजिटल साक्षरता में सुधार करना है। प्रस्तुत शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य सरकारी विद्यालयों में संचालित शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का समग्र एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन करना है तथा यह विश्लेषण करना है कि इन कार्यक्रमों का शिक्षण गुणवत्ता और विद्यार्थी अधिगम परिणामों पर क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि को अपनाया गया है। इसके अंतर्गत 40 सरकारी विद्यालयों के 100 शिक्षकों को नमूने के रूप में चयनित किया गया। डेटा संग्रह हेतु प्रश्नावली, कक्षा-अवलोकन तथा विद्यार्थी उपलब्धि अभिलेखों का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों से शिक्षकों में आत्मविश्वास, शिक्षण दक्षता एवं नवाचारी शिक्षण विधियों के प्रयोग में वृद्धि होती है। प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की कक्षाओं में विद्यार्थियों की सहभागिता अधिक पाई गई तथा सीखने के परिणामों में भी उल्लेखनीय सुधार देखा गया। हालाँकि, यह भी सामने आया कि प्रशिक्षण की सीमित अवधि, व्यवहारिक पक्ष की कमी, अनुवर्ती सहयोग का अभाव तथा संसाधनों की अनुपलब्धता इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को आंशिक रूप से सीमित करती है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शैक्षिक प्रशासकों एवं प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत करता है।

**मुख्य बिंदु:** शिक्षक व्यावसायिक विकास, सरकारी विद्यालय, शिक्षण गुणवत्ता, इन-सर्विस प्रशिक्षण, अधिगम परिणाम, शैक्षिक सुधार

<sup>1</sup> शोध छात्रा, राम कृष्णा धर्मार्थ फाउंडेशन विश्वविद्यालय, रांची, झारखण्ड, भारत,

**भूमिका (Introduction):** विस्तृत किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उसके सामाजिक एवं आर्थिक विकास की दिशा निर्धारित करती है। शिक्षा की गुणवत्ता का प्रत्यक्ष प्रभाव मानव संसाधन के निर्माण पर पड़ता है, और इस गुणवत्ता का केंद्रीय आधार शिक्षक होता है। शिक्षक न केवल ज्ञान का संप्रेषक है, बल्कि वह विद्यार्थी के व्यक्तित्व, सोच, मूल्य-बोध और जीवन-दृष्टि को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परंपरागत शिक्षा प्रणाली में शिक्षक की भूमिका मुख्यतः पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण तक सीमित मानी जाती थी। किंतु आधुनिक शैक्षिक दृष्टिकोण में शिक्षक को एक facilitator, guide, mentor और reflective practitioner के रूप में देखा जाता है। इस परिवर्तनशील भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाने के लिए शिक्षकों को निरंतर अपने ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण का विकास करना आवश्यक है। यही आवश्यकता शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की प्रासंगिकता को रेखांकित करती है। भारत में सरकारी विद्यालय शिक्षा के लोकतंत्रीकरण और सामाजिक समानता के प्रमुख माध्यम हैं। ये विद्यालय समाज के वंचित एवं विविध पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं। ऐसे विद्यालयों में शिक्षण कार्य कई चुनौतियों से घिरा रहता है—जैसे संसाधनों की कमी, बहुस्तरीय कक्षाएँ, भाषायी विविधता, सामाजिक-आर्थिक समस्याएँ तथा तकनीकी सीमाएँ। इन परिस्थितियों में शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे न केवल पाठ्यक्रम पूरा करें, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की आवश्यकताओं को भी समझें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि शिक्षा सुधार की कुंजी शिक्षक के व्यावसायिक विकास में निहित है। नीति के अनुसार शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण, पुनःप्रशिक्षण और व्यावसायिक उन्नयन के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। इसी संदर्भ में सरकार द्वारा विभिन्न स्तरों पर व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। हालाँकि, यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है कि क्या ये व्यावसायिक विकास कार्यक्रम वास्तव में अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त कर पा रहे हैं? क्या इन कार्यक्रमों से शिक्षण गुणवत्ता में वास्तविक सुधार हो रहा है? और क्या इसका प्रत्यक्ष लाभ विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों में परिलक्षित होता है? प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है।

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Significance of the Study):** शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों पर पर्याप्त संसाधन, समय और वित्तीय निवेश किया जाता है। इसके बावजूद यदि इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का व्यवस्थित मूल्यांकन नहीं किया जाए, तो शिक्षा सुधार के प्रयास अधूरे रह जाते हैं। इस अध्ययन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है—

- a) सरकारी विद्यालयों में शिक्षण गुणवत्ता सुधारने के लिए ठोस साक्ष्य उपलब्ध कराना।
- b) यह जानना कि प्रशिक्षण कार्यक्रम व्यवहारिक रूप से कितने उपयोगी हैं।
- c) नीति-निर्माताओं को प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार हेतु तथ्यात्मक आधार प्रदान करना।
- d) शिक्षकों की वास्तविक प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान करना।
- e) विद्यार्थी अधिगम परिणामों पर प्रशिक्षण के प्रभाव को समझना।

इस अध्ययन का महत्व इस दृष्टि से भी है कि यह शिक्षक व्यावसायिक विकास को केवल एक औपचारिक प्रक्रिया न मानकर उसे शिक्षण गुणवत्ता से सीधे जोड़कर देखता है।

**अध्ययन का क्षेत्र (Scope of the Study):** यह अध्ययन सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों तक सीमित है। इसमें शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के विभिन्न आयामों—शिक्षण विधियाँ, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन रणनीतियाँ, ICT उपयोग और विद्यार्थी अधिगम—का मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि शैक्षिक प्रशासकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

**शिक्षक व्यावसायिक विकास की संकल्पना (Conceptual Framework of Teacher Professional Development):** शिक्षक व्यावसायिक विकास (Teacher Professional Development – TPD) एक सतत, योजनाबद्ध एवं उद्देश्यपरक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शिक्षक अपने पेशे से संबंधित ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण एवं व्यावसायिक मूल्यों का निरंतर विकास करता है। यह प्रक्रिया केवल प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षण (Pre-Service Training) तक सीमित नहीं होती, बल्कि शिक्षक के पूरे सेवाकाल में चलने वाली एक आजीवन सीखने की प्रक्रिया है। आधुनिक शैक्षिक चिंतन में यह स्वीकार किया गया है कि शिक्षा की गुणवत्ता में स्थायी सुधार तभी संभव है जब शिक्षक स्वयं reflective learner बने रहें। व्यावसायिक विकास का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को बदलते शैक्षिक परिवृश्य के अनुरूप सक्षम बनाना है, ताकि वे विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित कर सकें।

**शिक्षक व्यावसायिक विकास के प्रमुख घटक:** शिक्षक व्यावसायिक विकास के प्रमुख घटकों को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है—

1. **विषय-वस्तु ज्ञान (Content Knowledge):** शिक्षक को अपने विषय का गहन एवं अद्यतन ज्ञान होना आवश्यक है। व्यावसायिक विकास कार्यक्रम विषय में नवीन शोध, अवधारणात्मक स्पष्टता और अंतःविषयक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होते हैं।
2. **शिक्षण-अधिगम विधियाँ (Pedagogical Skills):** आधुनिक शिक्षा में शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह केवल व्याख्यान पद्धति तक सीमित न रहे, बल्कि गतिविधि-आधारित, अनुभवात्मक, सहयोगात्मक और बाल-केन्द्रित शिक्षण विधियों का प्रयोग करें।

**कक्षा प्रबंधन (Classroom Management):** प्रभावी शिक्षण के लिए सकारात्मक कक्षा वातावरण आवश्यक है। व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षकों को अनुशासन, समय प्रबंधन और विद्यार्थी सहभागिता बढ़ाने की रणनीतियाँ प्रदान करते हैं।

**मूल्यांकन एवं प्रतिपुष्टि (Assessment and Feedback):** सतत एवं समग्र मूल्यांकन, रचनात्मक प्रतिपुष्टि और सीखने की प्रगति की निगरानी आधुनिक शिक्षा के अनिवार्य अंग हैं।

**ICT एवं डिजिटल दक्षता:** डिजिटल युग में शिक्षक के लिए तकनीकी दक्षता अत्यंत आवश्यक हो गई है। व्यावसायिक विकास कार्यक्रम ICT आधारित शिक्षण को बढ़ावा देते हैं।

**समावेशी एवं संवेदनशील दृष्टिकोण:** विविध सामाजिक, भाषायी एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के लिए समावेशी शिक्षा की समझ विकसित करना भी व्यावसायिक विकास का महत्वपूर्ण घटक है।

**शिक्षक व्यावसायिक विकास के सैद्धांतिक आधार (Theoretical Foundations):** शिक्षक व्यावसायिक विकास की अवधारणा विभिन्न शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित है—

- रचनावादी सिद्धांत (Constructivism):** रचनावादी दृष्टिकोण के अनुसार सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षार्थी अपने अनुभवों के आधार पर ज्ञान का निर्माण करता है। इसी प्रकार शिक्षक का व्यावसायिक विकास भी अनुभव, चिंतन और अभ्यास के माध्यम से होता है।
- अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत (Experiential Learning):** Kolb के अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत के अनुसार सीखना अनुभव → चिंतन → अवधारणा → प्रयोग की प्रक्रिया से होता है। व्यावसायिक विकास कार्यक्रम जब शिक्षकों को कक्षा-आधारित अनुभवों पर चिंतन का अवसर देते हैं, तब वे अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं।
- सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Social Learning Theory):** Bandura के अनुसार सीखना सामाजिक अंतःक्रिया से भी होता है। सहकर्मी सहयोग, समुदाय आधारित प्रशिक्षण और समूह चर्चा शिक्षक व्यावसायिक विकास को सशक्त बनाते हैं।---

**शिक्षक व्यावसायिक विकास: वैश्विक परिप्रेक्ष्य (Global Perspective):** वैश्विक स्तर पर शिक्षा प्रणालियों में शिक्षक व्यावसायिक विकास को अत्यधिक महत्व दिया गया है। विकसित देशों में इसे शिक्षा सुधार की रीढ़ माना जाता है।

- OECD देशों का दृष्टिकोण:** OECD देशों में शिक्षक प्रशिक्षण को निरंतर एवं अनिवार्य प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। यहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम—दीर्घकालिक होते हैं विद्यालय-आधारित होते हैं सहकर्मी सहयोग पर आधारित होते हैं
- फिनलैंड मॉडल:** फिनलैंड में शिक्षकों को उच्च स्तर का व्यावसायिक स्वायत्ता प्राप्त है। यहाँ शिक्षक व्यावसायिक विकास मुख्यतः—शोध-आधारित आत्म-विश्लेषण पर केंद्रित विद्यालय संस्कृति से जुड़ा हुआ होता है।
- एशियाई देशों का अनुभव:** जापान और सिंगापुर जैसे देशों में Lesson Study और Professional Learning Communities के माध्यम से शिक्षक व्यावसायिक विकास को बढ़ावा दिया जाता है।

इन वैश्विक अनुभवों से यह स्पष्ट होता है कि प्रभावी शिक्षक व्यावसायिक विकास— सतत, व्यवहारिक, सहयोगात्मक विद्यालय-केन्द्रित होना चाहिए।

**शिक्षक व्यावसायिक विकास : भारतीय परिप्रेक्ष्य (Indian Perspective):** भारत में शिक्षक व्यावसायिक विकास की परंपरा लंबे समय से चली आ रही है। स्वतंत्रता के पश्चात विभिन्न आयोगों और समितियों ने शिक्षक प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया है।

- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:** कोठारी आयोग (1964–66) ने शिक्षक गुणवत्ता को शिक्षा सुधार का केंद्र माना। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने इन-सर्विस प्रशिक्षण को अनिवार्य बताया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 ने शिक्षक को reflective practitioner के रूप में परिभाषित किया।
- वर्तमान परिवेश:** वर्तमान में शिक्षक व्यावसायिक विकास विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से संचालित किया जाता है— DIET, SCERT, NCERT, SSA / Samagra Shiksha, Online Platforms (DIKSHA आदि)

**सरकारी पहलें : शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (Government Initiatives)**

- समग्र शिक्षा अभियान (Samagra Shiksha):** समग्र शिक्षा अभियान का उद्देश्य स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है। इसके अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी गई है। जैसे विषय-विशेष प्रशिक्षण, समावेशी शिक्षा प्रशिक्षण, ICT आधारित प्रशिक्षण, विद्यालय-आधारित प्रशिक्षण।
- NISHTHA (National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement):** NISHTHA भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य शिक्षकों और विद्यालय प्रमुखों का समग्र व्यावसायिक विकास करना है।
  - NISHTHA के प्रमुख उद्देश्य:** शिक्षकों की शैक्षणिक दक्षता में वृद्धि, बाल-केन्द्रित शिक्षण को बढ़ावा, नेतृत्व क्षमता का विकास, डिजिटल साक्षरता को सुदृढ़ करना।
  - NISHTHA की प्रमुख विशेषताएँ:** मॉड्यूल आधारित प्रशिक्षण, ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों माध्यम कक्षा-आधारित गतिविधियों पर बल।
  - NEP 2020 और शिक्षक व्यावसायिक विकास:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षक व्यावसायिक विकास को शिक्षा सुधार का आधार मानती है। नीति के अनुसार— प्रत्येक शिक्षक को प्रति वर्ष न्यूनतम 50 घंटे का व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। प्रशिक्षण को आवश्यकता-आधारित बनाया जाए। डिजिटल प्लेटफॉर्म का व्यापक उपयोग किया जाए।

**शिक्षक व्यावसायिक विकास और शिक्षण गुणवत्ता का संबंध:** शिक्षण गुणवत्ता बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें शिक्षण विधियाँ, कक्षा वातावरण, मूल्यांकन प्रक्रिया, विद्यार्थी सहभागिता, सीखने के परिणाम शामिल हैं। शिक्षक व्यावसायिक विकास इन सभी आयामों को प्रभावित करता है। प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक— अधिक आत्मविश्वासी होते हैं। नवाचारी शिक्षण अपनाते हैं। विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयों को बेहतर समझते हैं समावेशी दृष्टिकोण अपनाते हैं। इस भाग में शिक्षक व्यावसायिक विकास की संकल्पना, उसके सैद्धांतिक आधार, वैशिक एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य तथा भारत सरकार द्वारा संचालित प्रमुख व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का विस्तृत विवेचन किया गया। यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक व्यावसायिक विकास शिक्षण गुणवत्ता सुधार का एक सशक्त माध्यम है, बशर्ते इसे सतत, व्यवहारिक और विद्यालय-केन्द्रित बनाया जाए।

**साहित्य समीक्षा (Review of Literature):** शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों पर किया गया शोध यह स्पष्ट करता है कि शिक्षक गुणवत्ता और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के बीच गहरा संबंध है। साहित्य समीक्षा का उद्देश्य यह समझना है कि पूर्व शोधों ने शिक्षक व्यावसायिक विकास की प्रभावशीलता, उसकी सीमाओं और उसके शैक्षिक प्रभावों को किस प्रकार विश्लेषित किया है। इस अध्ययन में अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर किए गए प्रमुख अध्ययनों की समीक्षा की गई है।

1. **अंतरराष्ट्रीय साहित्य समीक्षा (International Studies):** अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक व्यावसायिक विकास को शिक्षा सुधार का केंद्रीय तत्व माना गया है। अनेक देशों में यह स्वीकार किया गया है कि निरंतर एवं गुणवत्ता-आधारित व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों से शिक्षण गुणवत्ता और विद्यार्थी अधिगम में स्थायी सुधार संभव है।
  - Darling-Hammond के अध्ययनों में यह पाया गया कि जिन शिक्षा प्रणालियों में शिक्षक व्यावसायिक विकास को दीर्घकालिक एवं शोध-आधारित बनाया गया, वहाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। उनके अनुसार प्रशिक्षण तभी प्रभावी होता है जब वह शिक्षक की कक्षा-वास्तविकताओं से जुड़ा हो और उसे प्रयोग करने का अवसर प्रदान करे। Guskey ने शिक्षक व्यावसायिक विकास को एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया के रूप में देखा। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि प्रशिक्षण का प्रभाव तभी दिखाई देता है जब शिक्षक नई विधियों को अपनाने के बाद उनके सकारात्मक परिणामों का अनुभव करते हैं। उनके शोध से यह स्पष्ट हुआ कि केवल प्रशिक्षण देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यालय-स्तर पर निरंतर सहयोग और मूल्यांकन आवश्यक है। Garet एवं सहयोगियों के अध्ययन में व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की संरचना पर विशेष ध्यान दिया गया। उनके अनुसार दीर्घकालिक, विषय-विशेष और सहभागिता-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम अल्पकालिक कार्यशालाओं की तुलना में अधिक प्रभावी होते हैं। उन्होंने यह भी पाया कि सहयोगात्मक अधिगम और सहकर्मी संवाद शिक्षक व्यावसायिक विकास को सुदृढ़ बनाते हैं।
  - OECD की TALIS रिपोर्ट में शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षण गुणवत्ता के बीच प्रत्यक्ष संबंध को रेखांकित किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार जिन देशों में शिक्षक व्यावसायिक विकास को नीति-स्तर पर प्राथमिकता दी गई है, वहाँ शिक्षक अधिक आत्मविश्वासी, नवाचारी और शिक्षार्थी-केन्द्रित पाए गए हैं।
  - UNESCO की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि डिजिटल युग में शिक्षक व्यावसायिक विकास का स्वरूप बदल रहा है। ऑनलाइन प्रशिक्षण, मिश्रित अधिगम और डिजिटल समुदायों के माध्यम से शिक्षक अपनी व्यावसायिक दक्षता को सुदृढ़ कर रहे हैं।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक व्यावसायिक विकास को एक सतत, सहयोगात्मक और कक्षा-केन्द्रित प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है।

2. **राष्ट्रीय साहित्य समीक्षा (National Studies-Indian Context):** भारतीय संदर्भ में शिक्षक व्यावसायिक विकास पर किए गए अध्ययनों में सरकारी विद्यालयों की विशिष्ट परिस्थितियों को विशेष रूप से ध्यान में रखा गया है। NCERT द्वारा किए गए राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (NAS) से यह संकेत मिलता है कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की कक्षाओं में विद्यार्थियों के सीखने के स्तर में तुलनात्मक रूप से बेहतर परिणाम प्राप्त हुए हैं। रिपोर्ट के अनुसार प्रशिक्षण से शिक्षकों की अवधारणात्मक स्पष्टता एवं मूल्यांकन क्षमता में सुधार होता है। SCERT स्तर पर किए गए अध्ययनों में यह पाया गया कि इन-सर्विस प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पश्चात शिक्षकों ने कक्षा में गतिविधि-आधारित एवं बाल-केन्द्रित शिक्षण विधियों का अधिक उपयोग किया। इससे विद्यार्थियों की सहभागिता और रुचि में वृद्धि हुई। NISHTHA प्रशिक्षण मूल्यांकन रिपोर्टों में यह निष्कर्ष निकाला गया कि इस कार्यक्रम से शिक्षकों की डिजिटल दक्षता, कक्षा प्रबंधन क्षमता और नेतृत्व कौशल में सुधार हुआ। हालाँकि, कुछ राज्यों में तकनीकी संसाधनों की कमी के कारण प्रशिक्षण के लाभ सीमित पाए गए। समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत किए गए अध्ययनों से यह जात हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभाव विद्यालय-स्तर पर संसाधनों की उपलब्धता और प्रशासनिक समर्थन पर निर्भर करता है। जहाँ विद्यालयों में सकारात्मक वातावरण और नेतृत्व उपलब्ध था, वहाँ प्रशिक्षण अधिक प्रभावी सिद्ध हुआ। कुछ शोधों में यह भी सामने आया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अल्प अवधि, सेंद्रियिक प्रकृति और फॉलो-अप के अभाव के कारण शिक्षक प्रशिक्षण को व्यवहार में पूरी तरह लागू नहीं कर पाते।
3. **शिक्षक व्यावसायिक विकास और शिक्षण गुणवत्ता पर अध्ययनशिक्षण गुणवत्ता एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें शिक्षण विधियाँ, कक्षा वातावरण, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, मूल्यांकन प्रक्रिया और अधिगम परिणाम शामिल हैं। विभिन्न अध्ययनों में यह पाया गया है कि शिक्षक व्यावसायिक विकास इन सभी आयामों को प्रभावित करता है। कुछ अध्ययनों में यह देखा गया कि प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक अधिक प्रश्नोत्तरी, समूह कार्य और गतिविधि-आधारित शिक्षण का प्रयोग करते हैं। इससे कक्षा में सहभागिता बढ़ती है और विद्यार्थी अधिक सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। अन्य शोधों में यह निष्कर्ष सामने आया कि व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों से शिक्षकों में आत्म-चिंतन की क्षमता विकसित होती है, जिससे वे अपनी शिक्षण शैली में निरंतर सुधार करते रहते हैं।**
4. **शिक्षक व्यावसायिक विकास और विद्यार्थी अधिगम परिणाम:** विद्यार्थी अधिगम परिणामों पर शिक्षक व्यावसायिक विकास के प्रभाव को लेकर किए गए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षित शिक्षकों की कक्षाओं में विद्यार्थी अवधारणाओं को अधिक स्पष्टता से समझते हैं। कई अध्ययनों में यह पाया गया कि प्रशिक्षण के पश्चात विद्यार्थियों के परीक्षा परिणामों में सुधार हुआ तथा ड्रॉप-आउट दर में कमी आई। प्रशिक्षण से शिक्षकों को सीखने में कठिनाइयों की पहचान करने और उपयुक्त रणनीतियाँ अपनाने में सहायता मिलती है।

5. **शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की सीमाएँ (Challenges Identified in Literature):** साहित्य समीक्षा से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं— प्रशिक्षण की अवधि अपर्याप्त होना, व्यवहारिक गतिविधियों का अभाव, फॉलो-अप और मैटरशिप की कमी, संसाधनों की अनुपलब्धता, शिक्षकों पर कार्यभार अधिक होना, प्रशिक्षण का आवश्यकता-आधारित न होनाइन चुनौतियों के कारण प्रशिक्षण का अपेक्षित प्रभाव कई बार सीमित रह जाता है।
6. **शोध-अंतराल (Research Gap):** साहित्य समीक्षा के आधार पर निम्नलिखित शोध-अंतराल स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं। अधिकांश अध्ययन प्रशिक्षण के आयोजन तक सीमित हैं, उसके दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन कम हुआ है। भारतीय सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास और शिक्षण गुणवत्ता के बीच प्रत्यक्ष संबंध पर सीमित शोध उपलब्ध है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का विश्लेषण शिक्षक और विद्यार्थी दोनों स्तरों पर एक साथ कम किया गया है। ग्रामीण एवं शहरी सरकारी विद्यालयों में प्रशिक्षण प्रभावों की तुलनात्मक समीक्षा पर्याप्त रूप से नहीं की गई है। प्रस्तुत अध्ययन इन शोध-अंतरालों को संबोधित करने का प्रयास करता है।

इस भाग में शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों से संबंधित अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोधों की विस्तृत समीक्षा की गई। समीक्षा से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक व्यावसायिक विकास शिक्षण गुणवत्ता और विद्यार्थी अधिगम परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है, किंतु इसकी प्रभावशीलता प्रशिक्षण की संरचना, अवधि और अनुवर्ती सहयोग पर निर्भर करती है। साथ ही, इस भाग में शोध-अंतरालों की पहचान की गई, जो वर्तमान अध्ययन की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हैं।

**अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study):** किसी भी शोध का महत्व उसके स्पष्ट एवं सुव्यवस्थित उद्देश्यों पर निर्भर करता है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सरकारी विद्यालयों में संचालित शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करना है तथा यह समझना है कि ये कार्यक्रम शिक्षण गुणवत्ता और विद्यार्थी अधिगम पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं।

**मुख्य उद्देश्य:** सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के शिक्षण गुणवत्ता एवं विद्यार्थी अधिगम परिणामों पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।

#### **विशिष्ट उद्देश्य:**

1. सरकारी विद्यालयों में संचालित शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की प्रकृति एवं संरचना का अध्ययन करना।
2. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण विधियों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
3. शिक्षक व्यावसायिक विकास और कक्षा प्रबंधन क्षमता के बीच संबंध का अध्ययन करना।

4. प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पश्चात शिक्षकों की मूल्यांकन रणनीतियों में हुए परिवर्तनों का आकलन करना।
5. शिक्षक व्यावसायिक विकास का विद्यार्थी सहभागिता एवं अधिगम परिणामों पर प्रभाव निर्धारित करना।
6. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।
7. शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की प्रमुख सीमाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना।

**नीति-निर्माताओं एवं प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए सुधारात्मक सुझाव प्रस्तुत करना।**

**शोध प्रश्न (Research Questions):** प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित प्रमुख शोध प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है—

1. सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम किस प्रकार संचालित किए जाते हैं?
2. क्या प्रशिक्षण कार्यक्रमों से शिक्षकों की शिक्षण गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होता है?
3. प्रशिक्षण प्राप्त और अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण विधियों में क्या अंतर पाया जाता है?
4. शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का विद्यार्थी सहभागिता पर क्या प्रभाव पड़ता है?
5. क्या शिक्षक प्रशिक्षण से विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों में सुधार होता है?
6. शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में कौन-कौन सी प्रमुख बाधाएँ हैं?

**परिकल्पनाएँ (Hypotheses):** शोध को दिशा प्रदान करने हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं (Null Hypotheses) का निर्माण किया गया है।

1. शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों और शिक्षण गुणवत्ता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
2. प्रशिक्षण प्राप्त और अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण विधियों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
3. शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का विद्यार्थी अधिगम परिणामों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
4. शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों और कक्षा प्रबंधन क्षमता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
5. शिक्षक प्रशिक्षण और मूल्यांकन रणनीतियों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**शोध चर (Variables of the Study):**

1. **स्वतंत्र चर (Independent Variable):** शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम, इन-सर्विस प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ, ऑनलाइन/ब्लैंडेड प्रशिक्षण, विषय-विशेष प्रशिक्षण हैं।
2. **आश्रित चर (Dependent Variables):** शिक्षण गुणवत्ता, कक्षा प्रबंधन, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन रणनीतियाँ, विद्यार्थी सहभागिता, विद्यार्थी अधिगम परिणाम हैं।
3. **नियंत्रित चर (Controlled Variables):** विद्यालय का प्रकार, पाठ्यक्रम, शिक्षण अनुभव, विद्यालयीय संसाधन हैं।

**शोध प्रविधि (Research Methodology):** प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि (Descriptive and Analytical Research Method) का उपयोग किया गया है। यह प्रविधि शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की वर्तमान स्थिति का वर्णन करने तथा उनके प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

**शोध अभिकल्प (Research Design):** यह अध्ययन मिश्रित शोध अभिकल्प (Mixed-Method Design) पर आधारित है, जिसमें मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है।

● **मात्रात्मक भाग-** प्रश्नावली, उपलब्धि आँकड़े।

● **गुणात्मक भाग-** कक्षा अवलोकन, शिक्षक अनुभव, अभिलेख विश्लेषण।

#### **जनसंख्या एवं नमूना (Population and Sample)**

- जनसंख्या (Population):** अध्ययन की जनसंख्या में चयनित जिले के सभी सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शामिल हैं।
- नमूना (Sample):** 40 सरकारी विद्यालय, 100 शिक्षक, कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थी (अधिगम परिणाम हेतु) हैं। नमूना चयन हेतु स्तरीकृत यादचिक नमूना विधि (Stratified Random Sampling) अपनाई गई।

#### **आँकड़ा संग्रह के उपकरण (Tools for Data Collection)**

- शिक्षक प्रश्नावली:** शिक्षण विधियाँ, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन रणनीतियाँ, प्रशिक्षण अनुभव हैं।
- कक्षा अवलोकन अनुसूची:** शिक्षक-विद्यार्थी अंतःक्रिया, शिक्षण तकनीक, सहभागिता स्तर हैं।
- विद्यार्थी अधिगम अभिलेख:** परीक्षा परिणाम, सतत मूल्यांकन डेटा।

**उपकरणों की वैधता एवं विश्वसनीयता (Validity and Reliability):** प्रश्नावली की विषय-वैधता विशेषज्ञों द्वारा सुनिश्चित की गई। विश्वसनीयता का परीक्षण Cronbach Alpha विधि द्वारा किया गया, जो स्वीकार्य स्तर पर पाई गई।

**आँकड़ा विश्लेषण की तकनीकें (Techniques of Data Analysis):** प्रतिशत माध्य एवं मानक विचलन t-test सहसंबंध (Correlation) विषयवस्तु विश्लेषण (Qualitative Data)।

**नैतिक विचार (Ethical Considerations):** प्रतिभागियों की सहमतिगोपनीयता की रक्षाडेटा का शैक्षिक उद्देश्य हेतु उपयोग।

#### **अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study)**

- अध्ययन सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक
- नमूना आकार सीमित
- समय की सीमाएँ
- उत्तरों की व्यक्तिप्रकृता

**आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या (Data Presentation, Analysis and Interpretation):** इस भाग में अध्ययन के दौरान संकलित मात्रात्मक एवं गुणात्मक आँकड़ों का सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण, सांख्यिकीय विश्लेषण तथा तर्कसंगत व्याख्या की गई है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना था कि सरकारी विद्यालयोंमें संचालित शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षण गुणवत्ता एवं विद्यार्थी अधिगम परिणामों को किस हद तक प्रभावित करते हैं।

- उत्तरदाताओं का सामान्य विवरण (Demographic Profile of Teachers):** अध्ययन में कुल 100 शिक्षकों को शामिल किया गया, जिनमें पुरुष एवं महिला शिक्षक दोनों सम्मिलित थे। 58% पुरुष शिक्षक, 42% महिला शिक्षक शिक्षण अनुभव के आधार पर 0-5 वर्ष : 18%, 6-15 वर्ष : 47%, 16 वर्ष से अधिक: 35%, प्रशिक्षण सहभागिता, व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में नियमित रूप से शामिल शिक्षक : 72%, आंशिक/अल्प प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक : 28% हैं। यह आँकड़ा स्पष्ट करता है कि अधिकांश शिक्षक किसी न किसी रूप में प्रशिक्षण से जुड़े रहे हैं, जिससे अध्ययन के उद्देश्य को बल मिलता है।
- शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की प्रकृति:** शिक्षकों से यह जानकारी ली गई कि वे किस प्रकार के व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में शामिल हुए— प्रशिक्षण का प्रकार प्रतिशत, NISHTHA प्रशिक्षण 62%, DIET आधारित प्रशिक्षण 55%, ICT / डिजिटल प्रशिक्षण 48%, विषय-विशेष प्रशिक्षण 40%, समावेशी शिक्षा प्रशिक्षण 35% हैं। **व्याख्या:** यह स्पष्ट है कि NISHTHA और DIET आधारित प्रशिक्षण सरकारी विद्यालयों में सबसे अधिक प्रचलित हैं। डिजिटल प्रशिक्षण की भागीदारी भी धीरे-धीरे बढ़ रही है, जो बदलते शैक्षिक परिवर्त्य को दर्शाती है।
- शिक्षक प्रशिक्षण और शिक्षण विधियों के बीच संबंध:** शिक्षण विधियों में परिवर्तन का आकलन प्रश्नावली एवं कक्षा-अवलोकन दोनों के माध्यम से किया गया।  
**प्रमुख निष्कर्ष:** 68% शिक्षकों ने स्वीकार किया कि प्रशिक्षण के बाद उन्होंने गतिविधि-आधारित शिक्षण अपनाया। 61% शिक्षकों ने समूह कार्य एवं सहकारी अधिगम का उपयोग बढ़ाया। 70% शिक्षकों ने कहा कि वे अब प्रश्नोत्तरी एवं संवादात्मक शिक्षण को प्राथमिकता देते हैं।  
**सांख्यिकीय विश्लेषण (t-test):** शिक्षण प्राप्त एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण विधियों के औसत अंकों में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया ( $p < 0.05$ )।  
**व्याख्या:** यह परिणाम पहली शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करता है और यह सिद्ध करता है कि शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षण विधियों में सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण और कक्षा प्रबंधन क्षमता:** कक्षा प्रबंधन शिक्षक प्रभावशीलता का एक महत्वपूर्ण घटक है।  
**प्रमुख अवलोकन:** प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की कक्षाओं में अनुशासन बेहतर, विद्यार्थी सहभागिता अधिक, समय प्रबंधन प्रभावी पाया गया, प्रतिशत विश्लेषण, कक्षा प्रबंधन संकेतक, शिक्षण प्राप्त अप्रशिक्षित, अनुशासन 78%-52%, सहभागिता 75%-48%, समय प्रबंधन 72%-45%  
**व्याख्या:** यह दर्शाता है कि प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को कक्षा संचालन के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ प्रदान करते हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण और मूल्यांकन रणनीतियाँ:** प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य शिक्षकों को पारंपरिक परीक्षा प्रणाली से आगे बढ़कर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन अपनाने हेतु प्रेरित करना है।

**निष्कर्ष:** 66% शिक्षकों ने formative assessment अपनाने की पुष्टि की। 58% शिक्षकों ने प्रोजेक्ट एवं गतिविधि आधारित मूल्यांकन का प्रयोग बढ़ाया। 62% शिक्षकों ने विद्यार्थियों को फीडबैक देना शुरू किया।

**व्याख्या:** यह परिणाम यह दर्शाता है कि शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम मूल्यांकन प्रणाली को अधिक शिक्षार्थी-केंद्रित बनाने में सहायक हैं।---

6. **शिक्षक प्रशिक्षण और विद्यार्थी सहभागिता:** कक्षा-अवलोकन से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार— प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की कक्षाओं में प्रश्न पूछने वाले विद्यार्थी अधिक समूह चर्चा में सक्रिय सहभागिता, सीखने में रुचि अधिक पाई गई।
- सहसंबंध विश्लेषण (Correlation):** शिक्षक प्रशिक्षण और विद्यार्थी सहभागिता के बीच सकारात्मक सहसंबंध ( $r = 0.62$ ) पाया गया।

**व्याख्या:** यह स्पष्ट करता है कि शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थी सहभागिता को बढ़ाते हैं।

7. **शिक्षक प्रशिक्षण और विद्यार्थी अधिगम परिणाम:** विद्यार्थी अधिगम परिणामों का विश्लेषण परीक्षा परिणामों एवं सतत मूल्यांकन अभिलेखों के आधार पर किया गया।

**मुख्य निष्कर्ष:** प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की कक्षाओं में औसत अंक 8–12% अधिक अवधारणात्मक स्पष्टता बेहतर असफलता दर कम पाई गई।

**t-test परिणाम:** प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के विद्यार्थियों के अधिगम परिणामों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया ( $p < 0.05$ )।

यह तीसरी शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करता है।

8. **गुणात्मक विश्लेषण (Qualitative Findings):** शिक्षकों के अनुभवों से प्राप्त प्रमुख विषय—

- प्रशिक्षण से आत्मविश्वास में वृद्धि
- नवाचार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण
- कक्षा में प्रयोग की स्वतंत्रता
- सहकर्मी सहयोग में सुधार

कुछ शिक्षकों ने यह भी बताया कि प्रशिक्षण बहुत सैद्धांतिक होता है। विद्यालय स्तर पर अनुवर्ती सहयोग नहीं मिलता और संसाधनों की कमी से प्रशिक्षण का पूरा लाभ नहीं मिल पाता।

9. **प्रमुख निष्कर्षों की चर्चा (Discussion of Findings):** अध्ययन के निष्कर्ष पूर्ववर्ती राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोधों के अनुरूप हैं। यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम—

- शिक्षण गुणवत्ता में सुधार लाते हैं
- शिक्षकों की पेशेवर दक्षता बढ़ाते हैं

3. विद्यार्थी अधिगम परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं

हालाँकि, प्रभावशीलता प्रशिक्षण की गुणवत्ता, अवधि और अनुवर्ती समर्थन पर निर्भर करती है।

**10. सार (Summary):** इस भाग में आँकड़ों के विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षण गुणवत्ता, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन रणनीतियों, विद्यार्थी सहभागिता एवं अधिगम परिणामों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। साथ ही, कुछ संरचनात्मक एवं व्यावहारिक सीमाएँ भी सामने आईं।

**निष्कर्ष (Conclusions):** प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सरकारी विद्यालयों में संचालित शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का समग्र मूल्यांकन करना तथा यह विश्लेषण करना था कि ये कार्यक्रम शिक्षण गुणवत्ता और विद्यार्थी अधिगम परिणामों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। अध्ययन के विभिन्न चरणों—साहित्य समीक्षा, शोध प्रविधि, आँकड़ा विश्लेषण और व्याख्या—के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का एक प्रभावी साधन है। अध्ययन से यह प्रमाणित हुआ कि जिन शिक्षकों ने व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी की, उनमें शिक्षण कौशल, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन रणनीतियों तथा शैक्षिक नवाचार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ। प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की कक्षाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक संवादात्मक, सहभागितापूर्ण और विद्यार्थी-केंद्रित पाई गई। यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षण केवल शिक्षक के ज्ञान-वृद्धि तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसका प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थी अधिगम पर भी पड़ता है। प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के विद्यार्थियों में अवधारणात्मक स्पष्टता, सीखने में रुचि और शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। इस प्रकार यह अध्ययन इस धारणा को पुष्ट करता है कि शिक्षक की व्यावसायिक दक्षता और विद्यार्थी अधिगम के बीच सीधा संबंध है। हालाँकि, अध्ययन में यह भी सामने आया कि सभी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम समान रूप से प्रभावी नहीं हैं। प्रशिक्षण की अवधि, उसकी व्यवहारिकता, अनुवर्ती सहयोग तथा विद्यालय-स्तरीय संसाधनों की उपलब्धता प्रशिक्षण की प्रभावशीलता को प्रभावित करती है। जहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम आवश्यकता-आधारित, दीर्घकालिक और सहयोगात्मक थे, वहाँ उनके परिणाम अधिक सकारात्मक पाए गए।

**प्रमुख निष्कर्ष (Major Findings of the Study):** अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आए—

1. सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम व्यापक स्तर पर संचालित किए जा रहे हैं, जिनमें NISHTHA, DIET एवं ICT आधारित प्रशिक्षण प्रमुख हैं।
2. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की शिक्षण विधियों में सकारात्मक एवं नवाचारी परिवर्तन पाया गया।
3. शिक्षक प्रशिक्षण से कक्षा प्रबंधन क्षमता में उल्लेखनीय सुधार हुआ।
4. मूल्यांकन प्रक्रिया अधिक सतत, व्यापक और शिक्षार्थी-केंद्रित बनी।
5. शिक्षक व्यावसायिक विकास और विद्यार्थी सहभागिता के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

6. प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों के विद्यार्थियों के अधिगम परिणाम अपेक्षाकृत बेहतर पाए गए।
7. प्रशिक्षण की प्रभावशीलता को सीमित करने वाले कारकों में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण की अल्प अवधि और फॉलो-अप का अभाव प्रमुख हैं।

**शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications):** प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर अनेक महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ सामने आते हैं—

1. **शिक्षकों के लिए निहितार्थ:** शिक्षक प्रशिक्षण को औपचारिक दायित्व न मानकर व्यावसायिक विकास का अवसर समझें। कक्षा में नवाचार एवं आत्म-चिंतन की संस्कृति विकसित करें। प्रशिक्षण में सीखी गई विधियों को व्यवहार में लागू करने का प्रयास करें।
2. **विद्यालय प्रशासन के लिए निहितार्थ:** प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों को नवाचार के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विद्यालय स्तर पर सहयोगात्मक वातावरण एवं मेंटरशिप विकसित की जाए। संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
3. **नीति-निर्माताओं के लिए निहितार्थ:** शिक्षक व्यावसायिक विकास को शिक्षा नीति का केंद्रीय घटक बनाया जाए। प्रशिक्षण कार्यक्रमों को दीर्घकालिक और व्यवहारिक बनाया जाए। प्रशिक्षण के बाद फॉलो-अप एवं मूल्यांकन की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।---

**सुझाव (Suggestions):** अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

1. शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों को आवश्यकता-आधारित बनाया जाए।
2. प्रशिक्षण में व्यावहारिक गतिविधियों और कक्षा-आधारित अभ्यास को अधिक स्थान दिया जाए।
3. प्रशिक्षण के बाद मेंटोरशिप और फॉलो-अप प्रणाली विकसित की जाए।
4. डिजिटल प्रशिक्षण के साथ-साथ तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
5. प्रशिक्षण कार्यक्रमों को निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखा जाए, न कि एक बार की गतिविधि के रूप में।
6. शिक्षकों के कार्यभार को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण की समय-सारिणी बनाई जाए।

**भविष्य के शोध के क्षेत्र (Scope for Future Research):** यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए अनेक नए शोध क्षेत्रों की ओर संकेत करता है—

1. दीर्घकालिक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का अनुवर्ती अध्ययन।
2. ग्रामीण एवं शहरी सरकारी विद्यालयों में प्रशिक्षण प्रभावों की तुलनात्मक समीक्षा।
3. डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण और ऑनलाइन अधिगम के प्रभाव का अध्ययन।
4. विषय-विशेष प्रशिक्षण (गणित, विज्ञान, भाषा) की प्रभावशीलता पर शोध।
5. शिक्षक व्यावसायिक विकास और विद्यालय नेतृत्व के बीच संबंध का अध्ययन।

**अध्ययन की समग्र समीक्षा (Overall Summary of the Study):** प्रस्तुत शोध में सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का शिक्षण गुणवत्ता एवं विद्यार्थी अधिगम पर प्रभाव का व्यवस्थित अध्ययन किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा सुधार का एक सशक्त माध्यम है, बशर्ते इसे सुनियोजित, व्यवहारिक और निरंतर बनाया जाए। यह शोध न केवल शिक्षक व्यावसायिक विकास की महत्ता को रेखांकित करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आधारशिला शिक्षक की निरंतर सीखने की प्रक्रिया में निहित है। यदि शिक्षक सशक्त होंगे, तो विद्यार्थी सशक्त होंगे और अंततः राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होगी।

**उपसंहार (Conclusion Remark):** अंततः यह कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक सार्थक प्रयास हैं। इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि उन्हें शिक्षक की वास्तविक आवश्यकताओं, कक्षा की जमीनी सच्चाइयों और विद्यार्थी के अधिगम लक्ष्यों से जोड़ा जाए। यही दृष्टिकोण भविष्य में गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और प्रभावी शिक्षा प्रणाली के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।

### संदर्भ ग्रन्थ सूची:

- Darling-Hammond, L. (2006). Powerful teacher education: Lessons from exemplary programs. San Francisco: Jossey-Bass.
- Darling-Hammond, L., Hyler, M. E., & Gardner, M. (2017). Effective teacher professional development. Palo Alto, CA: Learning Policy Institute.
- Guskey, T. R. (2002). Professional development and teacher change. Teachers and Teaching: Theory and Practice, 8(3), 381–391.
- Guskey, T. R. (2000). Evaluating professional development. Thousand Oaks, CA: Corwin Press.
- Garet, M. S., Porter, A. C., Desimone, L., Birman, B. F., & Yoon, K. S. (2001). What makes professional development effective? American Educational Research Journal, 38(4), 915–945.
- Fullan, M. (2007). The new meaning of educational change. New York: Teachers College Press.
- Hargreaves, A., & Fullan, M. (2012). Professional capital: Transforming teaching in every school. New York: Teachers College Press.
- OECD. (2019). TALIS 2018 results: Teachers and school leaders as lifelong learners. Paris: OECD Publishing.
- UNESCO. (2015). Teacher policy development guide. Paris: UNESCO.
- Avalos, B. (2011). Teacher professional development in teaching and teacher education. Teaching and Teacher Education, 27(1), 10–20. ---National / Indian References
- National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2017). National Achievement Survey. New Delhi: NCERT.
- National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2020). Learning outcomes at the elementary stage. New Delhi: NCERT.

- Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: Government of India
- Ministry of Education, Government of India. (2021). NISHTHA: National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement. New Delhi.
- Ministry of Education, Government of India. (2022). Samagra Shiksha: Framework for implementation. New Delhi.
- State Council of Educational Research and Training (SCERT). (2019). Teacher training modules. Various States, India.
- DIET. (2018). In-service teacher training programmes: Evaluation report. New Delhi.
- Kothari, C. R. (2019). Research methodology: Methods and techniques (4th ed.). New Delhi: New Age International Publishers.
- MHRD. (2016). Guidelines for in-service teacher training. New Delhi: Government of India.
- Panda, S., & Mohanty, R. (2018). Teacher professional development in India. *Journal of Educational Planning and Administration*, 32(2), 145–160.---Bookson Education & Teacher Training
- Aggarwal, J. C. (2014). Teacher and education in a developing society. New Delhi: Vikas Publishing House.
- Siddiqui, M. A. (2015). Teacher education. New Delhi: APH Publishing.
- Sharma, R. A. (2018). Teacher education: Theory and practice. Meerut: R. Lall Book Depot.
- Best, J. W., & Kahn, J. V. (2012). Research in education (10th ed.). New Delhi: PHI Learning.
- Cohen, L, Manion, L, & Morrison, K. (2018). Research methods in education. London: Routledge.---Reports & Policy Documents
- World Bank. (2018). World development report: Learning to realize education's promise. Washington, DC.
- UNESCO. (2020). Global education monitoring report. Paris: UNESCO.
- Government of India. (2018). Teacher education reform in India. New Delhi.---Indian Journals & Research Articles
- Singh, A., & Mishra, P. (2019). Impact of teacher training on classroom practices. *Indian Journal of Teacher Education*, 6(1), 45–58.
- Verma, S. (2020). Teacher professional development and learning outcomes. *Journal of Educational Studies*, 12(2), 101–115.